International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 8 Issue 6, November-December, 2020, Impact Factor: 5.246

टैगोर के दार्शनिक विचारों का अध्धयन

अंजलि श्योकन्द[1], प्रो. ऊषा तिवारी[2]

[1]शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ झारखण्ड
[2]शोध निर्देशिका व आचार्य, शिक्षा विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ झारखण्ड

सारांश

भारत में सिद्ध पुरूषों और योगियों का आविर्भाव समय–समय पर होता रहा है। यह समय की मांग एंव आवश्यकता होती है कि परिस्थितिवश ऐसे दिव्यात्माओं का प्रकाश संसार के विभिन्न भागों में विकीर्ण होता है जिससे कि अन्धकार, मोह, माया, आडम्बर का नाश होता है और ज्ञान रूपी प्रकाश से यह जगत प्रकाशवान होता है। ऐसे ही दिव्यात्माओं में गुरूदेव रबीन्द्र नाथ टैगोर भी थे। इस सम्बन्ध में कथन है कि ''आधुनिक समय का सबसे बड़ा काम यही है कि वह कुछ पूर्ण योगी पुरूषो को पैदा करे। इस संसार का भविष्य भारतवर्ष के उन्ही पूर्ण योगियों, सन्तों एवं महात्माओ पर निर्भर है। इन्ही लोगो ने देश एवं संसार को सन्तुलित रखने का सफल प्रयास किया और भारत के तथा संसार के सभी देशवासियों ने उनका सन्देश, उपदेश एवं आदर्श सहर्ष स्वीकार कर उसका पालन किया। महात्मा एवं योगियों के सन्दर्भ में सत्य ही कहा गया है । ''योगियों के लिये सब कुछ सम्भव है शिक्षा, समाज, राजनीति धर्म, वाणिज्य आदि सभी क्षेत्रों मे योगियों की अपूर्व प्रतिभा विचित्र सृष्टि तैयार करती है, यह निश्चय है।''

टैगोर के दार्शनिक विचारों की पृष्ठभूमि

टैगोर एक उच्च कोटि के विचारक थे और विभिन्न दार्शनिक तत्वों के सम्बन्धमें विचार भी रखते थे । वह एक अध्यात्मिक नेता थे । कवि होकर वह दृष्टा भी थे।' रवीन्द्रनाथ पहले कवि थे और बाद में दार्शनिक। इसी प्रकार उनका दर्शन भी विकसित हुआ श्री पी0टी0 राजू का विचार है कि वह उन दार्शनिकों में से एकहै जो महान कवि थे और वह उन कवियों में से एक है जिन्होंने अपने दर्शन को स्वमेव अभिव्यक्ति दी है। टैगोर के सम्बन्ध में डॉ0 मुखर्जी ने भी लिखा है कि वाहय प्रकृति के साथ सम्पर्क के अलावा इस यात्रा के दौरान में कई महीनों तक अपने पिता के साथ समीपी साहचर्य ने उनके विचारों एवं चरित्र पर स्थाई प्रभाव डाला। रबीन्द्र नाथ जी के दर्शन पर उपनिषद एवं वेद का गहरा प्रभाव पड़ा है।

टैगोर ने काव्य साधना में अपनी दार्शनिक अनुभूतियों को व्यक्त किया है। अतएव उनका दर्शन कवि कल्पना है हदय की वेदना है, अध्यात्म का तर्क युक्त निरूपण नही। फिर भी उन्होंने पिंग्रल पैटीसन, वोसीन केट और वर्गसन की कृतियों का अध्ययन किया है। वे इस बात से सहमत होगें कि इन लोगों और रवीन्द्र नाथ की विचार धाराओं में काफी समानता है। यह निस्संदेह सत्य है कि कवि

टैगोर के विचार दार्शनिक है। टैगोर जी कवि एवं कलाकार होने के साथ–साथ शिक्षक एवं दार्शनिक भी थे ।

उनके दर्शन में उपनिषदों की झलक देखने का मिलती है । उपनिषदों में विवेचित विष्वबोध की भावना को टैगोर ने आत्मसात् किया था । उन्हें प्रकृति में अनन्त सत्ता का आभास होता है। उन्हें सम्पूर्ण जीव जगत में वही एक सत्ता दिखाई देती है। इसलिये मानव मात्र की एकता में उनका अनन्त विष्वास है । टैगोर जी के शब्दों में ष्मानवता को पहले अधिक विस्तृत भावुकता पूर्ण और शक्तिशाली एकता की अनुभूति करना है । उन्हें इस विष्व की वाहय विविधताओं के बीच एकता नजर आती है और इसलिये विष्व के अन्तराल में झांककर वे एक अध्यात्मिक यथार्थवाद की अनुभूति करते है । यथार्थ ज्ञान की अनुभूति द्वारा व्यक्ति का अहकार छूटता है और उसमें 'सर्वोत्तम भाव' उदय होता है । यही सद्ज्ञान की स्थिति है जिससे आनन्द की उपलब्धि होती है । टैगोर का मानना है कि अनन्त का ज्ञान और उसकी शक्ति आकाश के तारो की अपेक्षा मनुष्य की आत्मा में अधिक उपलब्ध होती है ।

टैगोर के दर्शन में मानव कल्याण को महत्वपूर्ण स्थान मिला है टैगोर जी ने लिखा है कि 'इसके साथ ही मानव करूणा के प्रति भी मुझे लालसा रही तथा स्वाभाविक रूप से मै अपने ढंग से अभिव्यक्ति देता रहा हूँ।

टैगोर का तत्वमीमांसा दार्शनिक चिंतन स्रोत

ईश्वर ब्रह्म

टैगोर का विचार है कि ईष्वर या ब्रह्म को हमे तर्क से नही बल्कि प्रेम और अनुभूति से जानने का प्रयत्न करना चाहिये। टैगोर ने अपने 'रिलिजन ऑफ मैन' में लिखा है कि हमें ईष्वर को उसी प्रकार अनुभव करना चाहिय जिस प्रकार हम प्रकाश का अनुभव करते हैं । उनका मानना है कि उसकी अनुभूति संसार में प्रत्येक क्षण होने वाली क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं में होती है । इसका कारण है कि सभी कार्य ईष्वर की इच्छा से प्रेरित होते हैं । टैगोर का विष्वास है कि ईष्वर पूर्णता को अनन्त आदर्श है और मनुष्य उसकी पूर्णता को प्राप्त करने की शाश्वत प्रक्रिया है ।

गुरूदेव के अनुसार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ईष्वर द्वारा निर्मित है वही समस्त प्राणी एवं वस्तुओं का निर्माण करता है । वे ईष्वर एवं जगत् दोनों को वास्तविक मानते थे । ईष्वर के निराकार एवं साकार दोनों रूपों को स्वीकारते थे । टैगोर जी ईष्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति मनुष्य को मानते थे । वे मनुष्य के भौतिक जीवन को भी महत्व देते थे और कहते थे कि मानव जीवन का अन्तिम उद्देश्य ईष्वर की प्राप्ति है ।

रवीन्द्र नाथ टैगोर ने ब्रह्म को मानवीकृत रूप में स्वीकार किया है । गुरूदेव विचार से ईष्वर एवं मनुष्य में एक व्यक्तिगत सम्बन्ध होता है । यह सम्बन्ध प्रेम एवं आनन्द का है । उनके विचार से यही कारण है कि ईष्वर का भी एक व्यक्तित्व है जिसके कारण सांसारिक व्यक्ति को नैतिक एवं अध्यात्मिक बनने में प्रेरणा मिलती है । टैगोर जी का मानना था कि जब व्यक्ति का ब्रह्म से सम्पर्क होता है तो उसे अनन्त सुख एवं शांति मिलती है । ब्रह्म सद्, चित और आनन्द से युक्त है। अतरू मानव की आत्मा को भी अन्त में आनन्द की प्राप्ति होती है।

आत्मा और जीव

टैगोर ने अपनी अमर कृति गीतांजली में लिखा है कि ष्ईष्वर और मनुष्य दो सत्यरूप है। इससे स्पष्ट है कि व्यक्ति की आत्मा ब्रह्म से अलग है, परन्तु उनकी स्वतंत्रता में टैगोर विष्वास करते है। आत्मा की स्वतन्त्रता ईष्वर पर निर्भर करती है। टैगोर का मानना है कि मनुष्य की आत्मा का लक्ष्य ब्रह्म में लय होना नही है बल्कि अपने को पूर्ण बनाना है।

गुरूदेव ने उपनिषद के सिद्धान्तों पर मनुष्य की आत्मा के तीन रूपों का वर्णन किया है प्रथम–उसका अपना अस्तित्व और उसकी रक्षा। द्वितीय–अपने अस्तित्व का ज्ञान। तृतीय–आत्मा व्यक्ति। इस तृतीय रूप में ही आत्मा की महानता छिपी है । इस रूप में उसकी संकीर्णता और स्वार्थपरता व्यापकता में बदल जाती है और एकत्व की भावना आती है । व्यक्ति अपनी आत्मा में दूसरे की आत्मा का अनुभव करता है और दूसरे में अपने आपको व्यक्त करता है।

गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार टैगोर जी का मत था कि प्रत्येक प्राणियो में ईष्वर का अंश आत्मा एवं जीव पाया जाता है । वे इसे प्राणियों की सबसे बड़ी विशेषता मानते थे। यदि ईष्वर का अंश मानव में न हो तो एकात्मक भाव की अनुभूति नही हो सकती। इसके लिये आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य प्राणी मात्र के प्रति संवेदनशील हो, कम से कम मानव, मानव में भेद न करे, उनकी सेवा करे । एकात्मक भाव ज्ञान का विषय नही, अनुभूति का विषय है। टैगोर जी का विचार था कि ये ऊपर से असमान होते हुये भी अन्दर से समान होते है । गुरूदेव आत्मा एवं जीव दोनों के महत्व को स्वीकार करते थे। गुरूदेव का विष्वास था कि जीव जिस प्रकार जैसा भी कार्य करेगें उन्हें वैसा ही फल प्राप्त होगा। वे परमात्मा को नियामक सत्ता के रूप में स्वीकार करते थे। इस लोक एवं परलोक में जो भी घटना एवं क्रिया होती है उन सभी क्रियाओं एवं घटनाओं का संचालक वे परमात्मा को ही मानते थे ।

तुलनात्मक अध्धयन

टैगोर का दर्शन मूलतः धार्मिक और नैतिक विषय हैं। कहीं पर प्रकृतिवादी का पुट है प्रकृति के बारे में उनका दृष्टिको.ा हिंदू परंपरा के दार्शनिक पहलुओं के साथ भी निकटता से जुड़ा हुआ था जिसमें प्रकृति को परमात्मा की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। जबकि बर्ट्रैंड रसेल के शिक्षा दर्शन में आदर्शवादी और व्यावहारिकतावादी तत्वों का प्रभाव विद्यमान हैं। अच्छी आदत; सदाचार, अनुशासन; अच्छे साहित्य आदि पर बल देकर रसेल आदर्शवाद की ओर अपना झुकाव प्रदर्शित करते हैं। और प्रकृतिवाद का समर्थन करते हैं।

टैगोर का दर्शनपूर्ण भौतिकवाद और आधुनिकीकरण पर आधारित है जबकि बर्ट्रैंड रसेल का दर्शन विज्ञान, गणित, तथा यथार्थवादी पर आधारित है जिसमें विवेक और ज्ञान तथा सत्य को अधिक स्थान दिया हैं।

टैगोर के तत्व मीमांसा में आत्मा; ब्रह्म पर आधारित है जबकि बर्टेड रसेल के तत्वमीमांसा में दार्शनिक चिन्तन के स्रोत; रसेल की अध्यात्म विधा, विष्व विधा पर आधारित है।

टैगोर के ज्ञान मीमांसा में वस्तु जगत का ज्ञान, आत्म तत्व का ज्ञान, ध्यान, मुक्ति, सत्य एवं योग, समाधि, सन्यास, जीवन, मृत्यु, चेतना, इच्छा, शरीर पुर्नजन्म पर आधारित है जबकि बर्टेड रसेल के

ज्ञान मीमांसा में परिचय द्वारा ज्ञान, चेतन आंकड़े के बाहर विस्तार; वर्णन द्वारा ज्ञान, पर आधारित है।

टैगोर के आचार मीमांसा में चार मूलभूत सिद्धांत हैं; प्रकृतिवाद, मानवतावाद, अंतर्राष्ट्रीयवाद और आदर्शवाद। शांतिनिकेतन और विष्व भारती दोनों इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि शिक्षा एक प्राकृतिक परिवेश में प्रदान की जानी चाहिए। जबकि बर्टेड रसेल के आचार मीमांसा में अध्यात्म शास्त्र का विकास; धर्म के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण धार्मिक विचार का अध्यात्मिक पहलू, धर्म का प्रणालीवाद और तार्किक पहलू, धर्म का नैतिक पहलू पर आधारित है।

सन्दर्भ

[1]. दत्त, कृष्णा और एंड्रयू रॉबिन्सन, रबीन्द्रनाथ टैगोर: द मिरिएड माइंडेड मैन, ब्लूम्सबरी, 1995, प्रिंट।
[2]. दास, शिशिर कुमार, द इंग्लिश राइटिंग्स ऑफ रबीन्द्रनाथ टैगोर, साहित्य अकादमी, 1994, प्रिंट।
[3]. टाइम्स ऑफ इंडिया, रबीन्द्रनाथ टैगोर एक दूसरे दर्जे के नाटककार गिरीश कर्नाड बेंगलुरु, 9 नवंबर 2012।
[4]. अमृत राय – रबीन्द्रनाथ के निबन्ध, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।
[5]. ओड., एल.के. – शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिन्दू ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1992.
[6]. गुप्ता, एस.पी. – भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएँ, शारदा पुस्तक भवन, II यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, 1996.
[7]. जायसवाल, एस0आर0 – (प्रतियोगी पत्रिका वार्षिक) गाँधी नेहरू, टैगोर एवं अम्बेडकर की प्रमुख विचारधाराएं प्रयाग, पब्लिकेशन, इलाहाबाद।